RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-12
December -2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

अमृतलाल नागर – हिन्दी उपन्यास जगत के ख्याति–प्राप्त कलाकार

डा0 पिंकी शर्मा

पूर्व शोध छात्रा, आगरा कालेज, आगरा (उ0प्र0)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 10 December 2018

Keywords
उपन्यासकार, संस्कृतिस्वरूप

ABSTRACT

अमृतलाल नागर आधुनिक हिन्दी साहित्य जगत के ख्याति–प्राप्त कलाकार हैं, उनकी कृतियों में सजग सामाजिक चेतना का निर्वाह सर्वत्र मिलता है । समाज की समस्याओं का निकट से अध्ययन करने के उपरान्त उनका गुण–दोषमय विवेचन करने में उनको पूर्ण सफलता प्राप्त हुयी है । सामाजिक बुराइयों के मूल कारणों को उद्घाटित करने में नागर जी की दृष्टि अधिक रमी है । सामाजिक यथार्थ एवं साहित्य का ऐसा अपूर्व संयोजन उनके सामाजिक एवं साहित्यक जीवन में निरन्तर साधना करते रहने का ही परिणाम है । जीवन के प्रति, समाज के प्रति अपने निष्पक्ष तथा पूर्वाग्रहविहीन सांस्कृतिक दृष्टिकोंण के कारण उनके उपन्यासों में सांस्कृतिक चेतना का अनूठा व्यवहार दृष्टव्य है । इस विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि नागर जी की साहित्य साधना उत्तरोत्तर विकासमान है। उनका उपन्यास साहित्य एक प्रकार से उनके व्यक्तित्व का ही विकास है ।

प्रस्तावना

अमृतलाल नागर हिन्दी के श्रेष्ठ उपन्यासकारों में से एक हैं । इन्हें प्रेमचन्द की परम्परा का उत्तराधिकारी माना जाता है । इन्होंने ऐतिहासिक, सामाजिक, पौराणिक सांस्कृतिक उपन्यासों का सृजन करके हिन्दी उपन्यास साहित्य की श्रीवृध्दि की नागर जी के उपन्यासों में प्रत्येक स्तर पर सांस्कृतिक चेतना की दृष्टि दृष्टिगोचर होती है ।

नागर जी ने ऐतिहासिक एवं पौराणिक उपन्यास भी पूर्ण कुशलता के साथ लिखे हैं, किन्तु उन्हें मध्यमवर्गीय जीवन के चित्रण में अपार सफलता प्राप्त हुई है। । ''बूँद और समुद्र, अमृत और विष'' नाच्यो बहुत गोपाल, इसके प्रमाण हैं । अमृतलाल नागर हिन्दी की मूर्धन्य उपन्यासकार हैं । वे असाधारण प्रतिभा के धनी हैं, तथा उनकी गहन चिन्तन शीलता, पर्यवेक्षण क्षमता, मानव मनो–विज्ञान में गहरी पैठ, सामाजिकता की परख, देश–काल और वातावरण चित्रण की अद्भुत क्षमता के कारण वर्णन कुशलता असंदिग्ध है । नागर जी के उपन्यासों पर गाँधीवादी झलक देखकर, डा0 राम विलास शर्मा उन्हें गाँधी जी का भक्त एवं विचारधारा से ''गाँधीवादी'' स्वीकार करते हैं ।1 नागर जी में गाँधी जी के अहिंसा सिध्दान्त को भी दृढ़ता से पालन करने की भावना नहीं रही है। इस प्रकार नागर जी की समन्वित विचारधारा को मानवतावाद का नाम दिया जा सकता है, जिसमें आदर्श भी है और यथार्थ भी । इस भूमि पर वे समाजवादी होते हुये भी गाँधीवादी है और साम्यवादी होते हुये भी अहिंसक हैं । नागर जी का सम्पूर्ण उपन्यास साहित्य भारतीय संस्कृति की धरोहर है । उनके चिन्तन में विभिन्न संस्कृतियों के प्रति श्रध्दा की भावना स्पष्टतः परिलक्षित होती है, अतः वे भारतीय संस्कृति के ऐतिहासिक पौराणिक संदर्भों को सामयिक परिप्रेक्ष्य में देखते हैं । उन्होंने एक समाज शास्त्री की भाँति संस्कृति के इतिहास का अन्तर्मन्थन किया है और पाया है कि किसी एक ही परमतपोनिष्ठ ज्ञान गुरू चेतन मानव समूह न सारी पृथ्वी के मानवों को सभ्यता के संस्कार प्रदान किये थे इसलिये वे असके महत्व को प्रतिपादित करते हैं कि 'संस्कृति' शब्द की जीवनी शक्ति और राष्ट्र का वैभव मात्र बढ़ना ही जानता है । भारत विभिन्न संस्कृतियों की मिलन स्थली रही है । नागर जी भारतीय संस्कृति के 'अनेकता में एकता' के स्वरूप को भारत की नैतिक सामाजिक प्रगति का सूचक मानते हैं, इसलिये विभिन्न संस्कृतियों के व्यक्तियों में परस्पर सौहार्द को उनके उपन्यास व्यंजित करते हैं ।

नागर जी के उपन्यासों में सांस्कृतिक चेतना के अन्तर्गत मिश्रित संस्कृत के स्वरूप देखने को मिलते हैं । जिसमें सर्वप्रथम वर्ण व्यवस्था का रूप है, यों तो वर्ण व्यवस्था एक सामाजिक संस्था है किन्तु भारत वर्ष में धार्मिक भावनाओं की प्रधानता के कारण इसे भी धार्मिक रूप में ग्रहण किया गया । नागर जी ने वर्णाश्रम व्यवस्था के इस कुत्सित रूप को पहचाना है, अतः इन्होंने वर्ण को जन्मना न मानकर, कर्मणा और जीवन दृष्टि से सम्बन्धित मानते हैं ।2 इसलिये उनके अधिकांश उपन्यासों के पात्र जातिय एवं वर्ण व्यवस्था को समाप्त कर, मानवतावादी भावना की आवश्यकता पर जोर देते हैं ।

नागर जी के अनुसार आज अनेक व्यवसायी अपने जातीय व्यवसाय को त्यागकर दूसरे वर्ण के व्यवसायों को अपनाये हुये हैं, अतः इन्होंने वर्ण व्यवस्था की समस्याओं को समाप्त करने का प्रयास अपने उपन्यासों के अन्तर्गत किया है । नागर जी ने अपने उपन्यासों में बाल विवाह की चर्चा भविष्य में होने वाले दुष्परिणामों को ध्यान में रखकर की है ।

इनके अनुसार बाल विवाह के दुखद परिणामों को देखकर, शिक्षित मध्यमवर्गीय युवक अपने माता–पिता की उपेक्षा करके स्वयं अपनी इच्छानुसार करने के पक्षधर हैं । नागर जी ने अन्तर्जातीय विवाह को प्रोत्साहन दिया है । अन्तर्जाजीय विवाह के सम्बन्ध में प्रारभिंक काल के उपन्यासकारों का दृष्टिकोण भी बहुत उदारवादी तथा

RRIJM 2015, All Rights Reserved

प्रगतिशील रहा है । नागर जी के अनुसार आधुनिक काल में नई चेतनायुक्त मध्यम– वर्गीय युवक यदि अन्तर्जातीय कर लेते हैं तो पुरानी पीढ़ी बौखलाती है, समाधान खोजती है, अन्त में नईपीढ़ी से समझौता कर लेती है । इसका उदाहरण नागर जी ने अपने उपन्यास, 'अमृत और विष'' में दिया है, ब्राह्मण पुत्र रमेश का बाल विधवा रानी से विवाह करने पर रमेश की माँ उसके पिता पुत्री को समझाती हैं ''होयेगा क्या कुछ नहीं, अरे अब आये दिन तो ऐसे नये मते के ब्याह होत रहत होंगे, अरे तुमहीं ने इधर चार पाँच बरसन में कित्ते ब्याह ऐसे गैर जाति विरादरी वाले करायेई कौन नवाई थोड़े भई हैं हमरे घर में ।''3 उपन्यासकार नागर जी यहाँ अन्तर्जातीय विवाहों की असफलता को स्पष्ट करने में पीछे नहीं रहे हैं, उनके अनुसार ऐसे विवाह वर्तमान समय में मध्यम वर्गीय समाज में पूर्णतः सफल सिध्द नहीं होते, क्योंकि ऐसे विवाहों को समाज पूर्णतः सफल सिध्द नहीं होने देते हैं । नागरजी ने नारी के विविध रूपों की व्याख्या अपने उपन्यासों के अन्तर्गत की है, नागर जी के अनुसार, नारी का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण होता है । नागर जी के उपन्यास साहित्य में नारी पात्रों की प्रधानता है, वह नारी के जीवन विशेषज्ञ हैं बड़े साहस से वह उन रूढ़ियों और कुरीतियों को उद्घाटित करते हैं, जिनके कारण स्त्रियों को हर तरह के अत्याचार सहन करने पड़ते हैं । यह अत्याचार वे बचपन से लेकर, बुढ़ापे तक सहती हैं कुछ चुपचाप सहती है तो कुछ विद्रोह करती है । नागर जी की मान्यता है कि समाज में नारी का जीवन पूज्य और आदरणीय होना चाहिये, परन्तुं स्त्री के रमणी रूप को भी नहीं भूला जा सकता । स्त्री पुरूष एक दूसरे के लिये भोग की वस्तु भी हैं और आत्म सम्मान का प्रतीक भी दोनों ही बातें कुदरती हैं । स्त्री पुरूष का सम्बन्ध शाश्वत और पवित्र हैं पति पत्नी के रूप में स्त्री पुरूषों की जोड़ी देश–काल से परे हैं । पर्दा प्रथा पर विचार करते हुये नागर जी अपने उपन्यास ''ये कोठेवालिया'' में नारी को स्वतन्त्रता न देने वाले समाज पर यह आरोप लगाया है कि उसमें नारी को ''घर घस्सू'' और दब्बू बना डाला है, अबला अबला कहते कहते वस्तुतः किसी युग की समर्थ तथा शक्तिशाली नारी को इतना पंगु बना दिया है कि वह अब अपनी भी रक्षा नहीं कर सकती । सामन्ती समाज ने नारी को अधीन रखने के लिये कमजोरी को उसका आभूषण बना दिया है । नारी का निरन्तर पर्दे के भीतर रहना पुरूष को उस ओर और भी अधिक आकर्षित करता है, अगर गोपनीयता की सामन्ती धारणा को त्यागकर नारी स्वतन्त्रतापूर्वक पुरूष के साथ विचरण करे तो उच्छृंखल काम कल्पनायें कम हो जायें ।

नागर जी कहते हैं कि ''मेरा ख्याल है हमारे यहाँ के लड़कों की गन्दी छेड़छाड़ का कारण यही है कि हमारे यहाँ स्त्री पुरूषों के बीच में मुसलमानी मुगलिया जमाने का पर्दा पड़ चुका है । गाँधी आन्दोलन और नये युग की कृपा से हमारे लड़के लड़कियाँ यद्यपि अब पहले से बहुत बदले हैं, फिर भी हमारे यहाँ सामन्ती दुराचारों की चेतना उनके यौवन की रंगीन कल्पनाओं को उच्छृंखल बना जाती हैं। 4 पर्दे के रिवाज अपने समय की किन्हीं परिस्थितियों के कारण आरंभ हुआ था । उन परिस्थितियों में उसका औचित्य आवश्यक था, लेकिन उस सामन्ती रीति को आज भी सर्वथा भिन्न स्थिति में निभाये चले जाना, हद दर्जे का पिछड़ापन है। नारी को पर्दे के अन्दर रख कर शैया का अलंकार बना देने वालों पर नागर जी का बहुत रोष है ।

धर्म तथा समाज सुधार की ओर में होने वाले अत्याचारों एवं भ्रष्टाचारों का भी नागर जी ने अच्छी तरह उद्घाटन किया है । ''बूँद और समुद्र'' उपन्यास के अन्त में 'महिला सेवा–मण्डल' नामक सुधारक संस्था के भ्रष्टाचार का भेद खोलते हुये लेखक ने बताया है कि उस संस्था के जाल में फंस जाने वाली लड़कियों को व्यभिचार के लिये विवश करने से पूर्व 'राधा–कृष्ण' के चित्र के सामने यह भेद किसी और से न खोलने की शपथ दिलवाई जाती है। 5 भ्रष्टाचार पर पर्दा डालने के लिये वहाँ धर्म–ग्रन्थों का उच्च स्वर से उच्चारण किया जाता है, संस्था को सुन्दर सुन्दर देव मूर्तियों से सजाया जाता है, बाहर से देखने पर किसी को भी यह सन्देह नहीं हो सकता कि यहाँ पापाचार भी होता है । इस प्रकार धर्मावतार देवी–देवताओं का उपयोग कैसे–कैसे कामों के लिये रह गया है, यह बताने की आवश्यकता नहीं रह जाती । नागर जी के संकेत ने कीर्तनों, राम लीलाओं, मन्दिरों, मस्जिदों आदि के नाम पर होने वाले पाप कर्मों को भी व्यक्त कर दिया है, ऐसे पाप स्थलों का भेद खुलने पर विचारशील समाज यह सोचने लगा है कि जिन आस्थाओं को लेकर हम जीने मरने का ढोंग करते हैं वे आस्थायें कितनी अशक्त हैं। 6 लेखक का अभिप्राय यह है कि समाज के अन्तःकरण में प्रगति चेतना प्रवेश पा चुकी है। अतः इन आडम्बरों का ढहना अवश्यंभावी है, अतः हम यह कह सकते हैं कि इस दिशा में नागर जी जैसे प्रगतिशील साहित्यकारों का योग अनुपम रहा है । यह इन्ही के परिश्रम का फल है ।

नागर जी ने महाजन प्रथा का वर्णन करते हुये कहा है कि रात–दिन समाज का शोषण करने वाले महाजन भी अपने को बहुत बड़ा धार्मिक कहते हैं, धर्मान्ध समाज की आँखों में धूल झोंकने के लिये यही सबसे सीधा रास्ता है । ''महाकाल'' उपन्यास में मोनाई महाजन इसी धर्माडम्बर के नाम पर सारे गांव का अनाज, बर्तन, कपड़ तक अपने गोदाम में एकत्र कर लेता है । इस पर भी यह अपने को पापी नहीं समझता, उसने अपने ही शब्दों में, ''जब से कण्ठी ली, अपनी जान में तो कौनों पाप किया नहीं मैंने । चींटे को चारा देता हूँ, गौ भी है, मन्दिर में ठाकुर जी और गौ माता की सेवा होती है, पुजारी जी को इसी हेतु रखा है पुजारी जी को तनख्वा देता हूँ । पर्व त्यौहार के दिन जैसी सरधा है वैसा दान–पुण्य भी करता ही हूँ – इस तरह ब्राह्मण की सेवा भी कर देता हूँ ।'' 7

नागर जी ने धर्म की महिमा पूँजी– पतियों के स्वार्थ के साथ मिलकर धर्म के थोथे विचार पर व्यंग किया है । इसके अतिरिक्त यह भी स्पष्ट किया है कि जिन आश्रमों तथा धर्म स्थलों को तथाकथित दानवीर सेठों के कीर्ति स्तम्भ के रूप में आदर सत्कार किया जाता है उसकी नीवें स्वार्थपूर्ण शोषण के कीचड़ में धंसी हुयी हैं । नागर जी ने धर्म के नाम पर समाज का शोषण करने वालों पर प्रहार किया है। नागर जी की उपन्यासिक चेतना ने साहित्य को प्रभावित किया है और उनके उपन्यासों में मिश्रित विभिन्न संस्कृतियों की झलक पग–पग पर देखी जा सकती है। नागर जी के उपन्यासों में चित्रित उच्च वर्ग के सांस्कृतिक विचारों पर औद्यौगिक एवं पूँजीवादी

RRIJM 2015, All Rights Reserved

सभ्यता का विशेष प्रभाव रहा है । उच्च वर्ग की पुरानी पीढ़ी परम्परागत रूढ़ियों, मूल्यों एवं प्रतिमानों में आस्था व्यक्त करती है, वहीं नई पीढ़ी इन मूल्यों को नकारती हुयी प्रतीत होती है । एक ओर उच्च वर्ग के व्यवसायी एवं शासक लोग जाति वर्ण बांकेमल'' का यह कथन दृष्टव्य है – इसी हमारे भारत वर्ष में औरतें सती होवें थीं, विनके देवी मानके पूजे थे । अपनी इज्जत बचाने के लिये आग में भस्म हो जाया करें थीं । 11

अमृतलाल नागर जीवन दृष्टा और सृष्टा साहित्यकार थे । साहित्यकार समाज का मन और मष्तिष्क होता है । समसायिक समाज की पीड़ा विषमता को उन्होंने अपनी खुली आँखें से देखा ही नहीं, वरन् भोगा भी था, अतः उनके चिन्तन में अनुभूति की गहराई विद्यमान है । अपनी सहानुभूति के सागर मन्थन से चिन्तन की जो मणिया अद्‌भुत हुयी उनसे उन्होंने व्यष्टि का महत्व तो प्रदान किया किन्तु उसके चिन्तन में सामाजिकता का समावेश अनिवार्य माना है क्योंकि व्यष्टि का चिन्तन–मनन सामाजिक परिप्रेक्ष्य में ही प्रेम और श्रेय हो सकता है । व्यक्ति की अपेक्षा, समाज का महत्व अधिक है ।

नागर जी भारतीय संस्कृति के ''अनेकता में एकता'' के स्वरूप को भारत की नैतिक, सामाजिक प्रगति का सूचक मानते हैं, इसलिये विभिन्न संस्कृतियों के व्यक्तियों में परस्पर सौहार्द को उनके उपन्यास व्यंजित करते हैं ।

नागर जी के उपन्यासों में एक ओर तो उत्तर भारत की सांस्कृतिक झाँकी को देखा जा सकता है, दूसरी ओर दक्षिण भारत के देश काल, वातावरण, वेशभूषा, रहन–सहन की सांस्कृतिक समग्रता प्राप्त होती है । इस प्रकार नागर जी ने अपने उपन्यासों में प्रगतिशील विचारों का समर्थन किया है । उनके चिन्तन का मूल यही है कि यदि किसी व्यक्ति की घड़ी समय बताना बन्द करदे, फिर भी समय तो नहीं रूकता, वस्तुतः नागर जी केवल वर्ग संघर्ष में विश्वास रखने वाले कोरे प्रगतिवादी उपन्यासकार ही नहीं है, अपितु उनकी प्रगतिशीलता पाठकों के लिये विचार के लिये नये आयाम भी जैसे सामाजिक संरचना के तत्वों को अपने स्वार्थ के लिये भुनाने का प्रयत्न करते हैं, वहीं दूसरी ओर उच्च वर्ग इन रूढ़ मूल्यों से समाज को मुक्ति दिलाने के लिये प्रयत्नरत् हैं । विवाह एवं पारिवारिक मान्यता के संदर्भ में भी यह तथ्य स्पष्ट होता है कि उच्च वर्ग में नये सांस्कृतिक मूल्य स्थान पा रहे हैं । भारतीय समाज में विवाह एक धार्मिक संस्कार के रूप में माना जाता रहा है । किन्तु आधुनिक युग में पाश्चात्य प्रभाव के फलस्वरूप उच्च वर्ग इस संस्कार से मुक्त होकर स्वच्छन्दता अपना रहा है । ''बूँद और समुद्र'' उपन्यास में सज्जन वर्मा का यह कथन इस ओर संकेत करता है – ''स्त्री पुष का प्रेम सिर्फ देह सम्बन्ध या उसकी इच्छा का ही दूसरा नाम है यह बात समाज के बहुत बड़े तब के लिये आज भी 100 फीसदी सही है, तुम्हारे कल्चर, साहित्य और ऊँची ऊँची बातों का इतना प्रचार हो जाने पर भी साधारण मनुष्य अपने दृष्टिकोंण में कोई फर्क नहीं कर पाया है। 8 नागर जी के अनुसार उच्च वर्ग में पति–पत्नी के सम्बन्धों में वह पावनता नहीं रही, जो प्राचीनकाल में थी । यह सम्बन्ध उनमें मात्र एक दूसरे की आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन समझा जाने लगा है । उनके अनुसार ''स्त्री–पुरूष एक दूसरे के लिये भोग की वस्तु भी है और आत्म सम्मान का प्रतीक भी दोनों ही बातें कुदरती हैं जो नाते रिश्ते हैं उन्हें छोड़ कर हर स्त्री और पुरूष जिस नजर से चाहें देखने के लिये स्वतन्त्र हैं। 9 ''एकदा नैमीषारण्ये'' उपन्यास में काशी का बूढ़ा महासेटिढ धनक अपनी पत्नी रम्भा को चन्द्रगुप्त को समर्पित करने के लिये प्रस्तुत हो जाता है – वर्तमान स्थिति में बूढ़े धनक की यथार्थ व्यावहारिक बुध्दि के ऊपर से मिथ्या अहम की कैचुल उतार दी। 10 नागर जी के उपन्यासों में उच्च वर्ग के भारतीय संस्कृति से प्रभावित पात्र सतीत्व, पतिव्रत आदि सिध्दान्तों में आस्था व्यक्त करते हुये परिलक्षित होते हैं । इस संदर्भ में ''सेठ खोजती है । 12

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. ''आजकल'' पत्रिका अंक अक्टूबर 1988 में दिये गये डा0 राम विलास शर्मा के साक्षात्कार से ।
2. ''उपन्यासकार अमृतलाल नागर'' – डा0 दामोदर वशिष्ठ एवं आशा बाबड़ी मुद्रित प्रकाशन कैथर्ल (हरि0) संस्करण – 1975 पृ0 – 78
3. ''अमृत और विष''– अमृतलाल नागर पृ0 408
4. ''ये कोठेवालियाँ – अमृतलाल नागर पृ0 138
5. ''बूँद और समुद्र'' – अमृतलाल नागर पृ0 529
6. ''बूँद और समुद्र'' – अमृतलाल नागर पृ0 529
7. ''महाकाल'' – अमृतलाल नागर पृ0 144 – 145
8. ''बूँद और समुद्र'' – अमृतलाल नागर 1990 पृ0 423
9. ''बूँद और समुद्र'' – अमृतलाल नागर 1990 पृ0 112
10. ''एकदा नैमिषारण्ये'' – अमृतलाल नागर, लोक भारतीय प्रकाशन, इलाहाबाद प्रथम संस्करण'1972 पृष्ठ 152
11. ''सेठ बांकेमल'' – अमृतलाल नागर राजपाल एण्ड संस, दिल्ली संस्करण 1987, पृष्ठ 111
12. ''उपन्यासकार अमृतलाल नागर'' – डा0 दामोदर वशिष्ठ एवं आशा बागड़ी मुद्रित प्रकाशन कैथर्ल (हरि0) संस्करण – 1975 पृ0 – 167

RRIJM 2015, All Rights Reserved